शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

प्रताप सहगल के नाटक 'अन्वेषक' में पौराणिक ऐतिहासिक परिवेश एवं युगीन यथार्थ

प्राप्तिः 29.05.2023
स्वीकृतः 24.06.2023

36

प्रो० दीपा त्यागी
हिन्दी विभाग

श्रीमती चित्रा
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
इस्माईल नेशनल महिला पी जी कॉलेज, मेरठ
ईमेलः *chitravasu29@gmail.com*

सारांश

'अन्वेषक' नाटक प्रताप सहगल जी द्वारा इतिहास की पृष्ठभूमि पर लिखा गया नाटक है। यह नाटक प्राचीन भारतीय महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट'प्रथम' के जीवन से संबंधित है। नाटक का नायक आर्यभट अपने अन्वेषणों के माध्यम से निरंतर चलती आ रही जर्जर परंपराओं, रूढ़िग्रस्त मान्यताओं और अंधविश्वासों का खुलकर विरोध करता है और जिसे अपने प्रत्येक मान्यता और अन्वेषण की स्थापना के लिए विरोध और संघर्ष का सामना करना पड़ता है। आर्यभट द्वारा की गई दशमलव की खोज, पृथ्वी का अपने अक्ष और सूर्य के चारों ओर घूमना, चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण की खगोलीय घटना आदि अन्वेषणों की तार्किक अवधारणा को ब्राह्मणवादी लोग स्वीकार नहीं करते और वह ब्राह्मणवादी ताकतें आर्यभट का विरोध करती हैं, उन्हें प्रताड़ित करती हैं और अंत में देश से निर्वासित कर देती हैं। इन्हीं ऐतिहासिक तथ्यों पर लिखा गया यह नाटक वर्तमान समाज में फैली विसंगतियों और सीमाओं को स्पर्श करता है क्योंकि आज भी हमारे समाज में ऐसी विरोधी ताकतें मौजूद हैं जो एक सच्चे अन्वेषक को आगे बढ़ने से रोकती हैं। इस रूप में यह नाटक समकालीनता के नए विमर्शों को खोलता हुआ समाज में स्थित प्रतिगामी और प्रगतिकामी शक्तियों के संघर्ष का नाटक बन जाता है।

"भारत इतिहास में गुप्तकाल स्वर्णिम युग के नाम से जाना जाता है और यह सही भी है क्योंकि इसी काल में साहित्य, संगीत एवं विज्ञान आदि का अप्रतिम विकास नजर आता है।"[1] प्रताप सहगल जी द्वारा लिखित नाटक 'अन्वेषक' इसी बात का प्रमाण है इस नाटक में इन्होंने अन्वेषक द्वारा किए गए आविष्कार और विज्ञान का प्रयोग समाज पर किस तरह प्रभाव डालता है? अवरोधकारी और अंधविश्वासी *शक्तियों* के सामने क्रांतिकारी अन्वेषण करने वाले किसी भी अन्वेषक को किस मानसिक यातना से गुजरना पड़ सकता है और अंततः उसकी क्या नियति हो सकती है? इस सवाल पर भी यह नाटक गौर करता है।

इतिहास नाटक की पृष्ठभूमि है इसलिए यह ऐतिहासिक नाटक नहीं है। इसका उद्देश्य इतिहास की जानकारी देना भी नहीं बल्कि इतिहास के एक कालखंड, उस कालखंड में जन्मे आर्यभट के अन्वेषणों

के बहाने परिवर्तनकामी शक्तियों के संघर्ष को रेखांकित करना है। इसी के साथ जुड़ते हैं प्रेम, ईर्ष्या, स्पृहा, देश–प्रेम और वैज्ञानिक–टैंपर से जुड़े तमाम सवाल। इतिहास के महीन तंतु को एक प्रभावी नाटक में रचने की क्षमता यहाँ साफ झलकती है। "इतिहास को आधार बनाकर जयशंकर प्रसाद से लेकर सुरेंद्र वर्मा तक अनेक नाटककारों ने महत्वपूर्ण नाटक लिखे हैं। इनमें इतिहास को न केवल नई दृष्टि से देखने की कोशिश की गई है, बल्कि बहुत–से उपेक्षित चरित्रों को नए रूप–रंग और अर्थवत्ता के साथ पेश किया गया है। प्रताप सहगल अपने नए नाटक 'अन्वेषक' में इतिहास से प्राप्त आर्यभट से संबंधित एक–दो पंक्तियों के आधार पर ही समकालीन युग से परे की स्थिति को युगीन और संप्रेषणीय के साथ मिलाकर देखने की कोशिश करते हैं। यह नाटक प्रसिद्ध खगोलविद और गणितज्ञ आर्यभट जैसे अन्वेषक की पीड़ा भरी यात्रा को उन प्रतिगामी शक्ति और मूल्यों के साथ व्यंजित करता है जिसके कारण प्रत्येक युग का सर्जक या अन्वेषक तिरस्कृत ही नहीं होता, वरन उसके मौलिक कार्य को समाज–विरोधी घोषित करते हुए हमेशा के लिए नष्ट करने का षड्यंत्र रचा जाता है। सामाजिक विकास के लिए जिस आधुनिक सोच की जरूरत होती है, उसके अभाव में तथा अपनी प्रभुता को समाप्त होते देखकर कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी इस विकास में रुकावट बन जाते हैं। नाटक के पात्र चिंतामणि तथा चूड़ामणि इसी तरह की बौद्धिक मान्यताओं के प्रतिनिधि पात्र हैं जबकि इनके विपरीत आर्यभट उन मिथ्या धारणाओं का खुलासा करता है जो अंधविश्वासों या परंपराओं का अंधानुकरण करने से पैदा हो रही हैं।"[2]

"आर्यभट का कोई चेहरा बने, कोई चरित्र बने, जो एक ऐसे आदमी की पीड़ा को अभिव्यक्त कर सके, जिसे अपने नए–नए अन्वेषणों का विरोध झेलना पड़ता है। उसे उन ताकतों का विरोध झेलना पड़ता है, उनका सामना करना पड़ता है, जिनके निहित स्वार्थों पर उसके नए–नए अन्वेषण चोट करते हैं। तब ब्राह्मणत्व की छाया में जो पुरोहित–संस्कृति उभरी और जिसने आज भी भारतीय समाज के बड़े हिस्से को किसी ना किसी रूप में जकड़ रखा है, उस पर ऐसे अन्वेषण सीधा हमला थे, जो आदमी को अंधविश्वासों एवं तर्कहीन रूढ़ियों से मुक्त करने की क्षमता रखते थे। तब भी ऐसा माहौल रहा होगा और उन निहित स्वार्थों वाले तत्वों का कोपभाजन आर्यभट को बनना पड़ा होगा।"[3] आर्यभट के खिलाफ निहित स्वार्थों वाली पुरोहिती शक्तियां पूरा हमला करती है, पर वह अपनी राह से हटता नहीं। "नाटक का नायक आर्यभट'प्रथम' अपनी नई खोज के कारण अपनी ही जाति एवं तत्कालीन समाज के विरोध का सामना करता है। आर्यभट का खगोल में किया गया अन्वेषण–"पृथ्वी स्थिर नहीं है बल्कि अपने अक्ष पर पूर्व की ओर घूमती है। शास्त्रोक्त राहु–केतु के कारण ग्रहण लगने का सिद्धांत मिथ्या है––––– चंद्र की छाया पृथ्वी पर पड़ती है तो सूर्यग्रहण होता है। जब पृथ्वी की छाया चंद्र पर पड़ती है तो चंद्रग्रहण होता है।" यह सिद्धांत इसकी अपनी ही जाति के लोगों को स्वीकार्य नहीं था। इस अन्वेषण के माध्यम से आर्यभट ने ब्राह्मणों के पौरोहित्य को चुनौती दी थी। तत्कालीन ब्राह्मण समाज ने धर्म के नाम पर आर्यभट का तिरस्कार किया, बहिष्कार किया, लांछन लगाए और तत्कालीन समाज को तोड़ने की साजिश की। फलस्वरूप हताश, निराश तथा खंडित आर्यभट ने स्वयं ही देश छोड़ने का फैसला किया और काल के अंधकार में विलीन हो गया। अकेले पड़े आर्यभट का स्वयं से, अपने प्रेम से, स्वजातियों से, समाज से और राजनीतिक शक्तियों से द्वन्द्व संघर्ष और लड़ाई कई गंभीर और प्रासंगिक प्रश्न खड़े करते हैं।"[4]

आर्यभट का चरित्र प्रतिगामी शक्तियों से टकराता हुआ संघर्ष को तीखी धार देता है और उसके संवादों में तीखे सामाजिक–राजनीतिक वक्तव्य की झलक मिलती है। नाटककार अप्रत्यक्ष रूप से

दृश्यात्मक ध्वनियों एवं क्रियाओं द्वारा दर्शकों की भावनाओं को उद्‌बोधित करता हुआ उन्हें आर्यभट के ऐसे स्वप्नदृष्टा रूप से मिलवाता है, जो क्रांतिकारी होते हुए भी आदर्शवादी अन्वेषक का बाना पहनता है। नाटककार इन पात्रों के बारे में इतना ही बता पाता है कि एक ओर अपावन, भ्रष्ट और गले–सड़े मूल्यों को अपनाने वाले चिंतामणि–चूड़ामणि जैसे मठाधीश हैं, तो दूसरी ओर सुविधाओं से परे जाकर सत्य का अन्वेषण करने वाले आर्यभट का आदर्श अन्वेषक रूप। प्रताप सहगल का उद्देश्य इतिहास का पुनर्सृजन करना या कथा का निर्माण करना नहीं है इसलिए नाटक का अंत चाहे टकराहट भरा नहीं बनता, फिर भी यह सामाजिक जटिलताओं के भीतर एक सच्चे सृजक द्वारा सही रास्ते के चुनाव और उसकी महत्वशीलता को रेखांकित करता है। इसलिए नाटककार अन्वेषक के सपने के साथ, उसकी सत्य की तलाश की आकांक्षा के साथ नाटक को समाप्त करता है।

"अतीत को खंगालना, उसकी ओर मृदुल होना भी सृजन का प्रेरक हो सकता है। इतिहास हमारे सामने उन कारणों तथा तथ्यों को रखता है जो स्थिति को जन्म देते हैं। –'अन्वेषक' की रचना का मूल-बिंदु यहीं से प्रारंभ होता है। पांचवी सदी के उत्तरार्ध में हुए आर्यभट और उनके अन्वेषण को इस नाटक की कथा का आधार बनाया गया है। प्रगतिकामी और प्रतिगामी शक्तियों के बीच संघर्ष तब भी था और आज भी है, इसलिए नाटक समकालीन प्रश्नों पर भी प्रकाश डालता है। वैज्ञानिक के कार्य में तब भी अनेक बाधाएं थी, आज भी हैं। उनके रूप तथा प्रकार में अवश्य अंतर हो सकता है। आज से पंद्रह–सोलह सौ साल पहले अधिकांश जनता अशिक्षित तथा अंधविश्वासी थी। ज्ञान का जरा–सा आलोक भी उनके लिए चमत्कारी तथा विस्मयकारी और उनके विश्वासों–आस्थाओं को हिला देने वाला था। उस समय अंधविश्वासी तथा अवरोधकारी शक्तियों का सामना करना किसी भी अन्वेषक के लिए संभव नहीं था। नाटक का मुख्य पात्र आर्यभट है– पांचवी–छठी शताब्दी का एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक। उसी के कार्य तथा सामाजिक–सांस्कृतिक–राजनीतिक जीवन को इस नाटक की विषयवस्तु तथा पृष्ठभूमि बनाया गया है।"[5]

"नाटककार इस नाटक के माध्यम से आर्यभट को विज्ञान के इतिहास में, उनके अन्वेषणों को सामने लाकर महत्वपूर्ण स्थान देना चाहता है, जिससे पश्चिमी जगत के लोग भी इस महत्वपूर्ण गणितज्ञ की खोजों से परिचित हो सकें।"6 "वह एक गणितज्ञ और खगोलशास्त्री था। इस क्षेत्र में उसके अन्वेषण क्रांतिकारी थे। इतनी छोटी आयु में उसने जो प्राप्त किया था, वास्तव में वह अद्वितीय था तथा उसकी अद्‌भुत प्रतिभा को हमारे सामने रखता है।"[7] नाटक की नायिका केतकी का भी चरित्र उभरता है वह आर्यभट से प्रेम करती है और विवाह करना चाहती है। आर्यभट भी केतकी के प्रेम का सम्मान करते हैं लेकिन उनके लिए अपना अन्वेषण सर्वोपरि है बाकी सब कुछ बाद में। एक बार जब आर्यभट पढ़ने में तल्लीन होता है, केतकी के आने का उन्हें आभास भी नहीं होता तब वह कविता के माध्यम से आर्यभट को अपने आने का संकेत देती है–

"मेरे मन की जल राशि में बेकल हलचल
कहीं झांकता मृग–शावक सूने कोन से
और कभी गहरे काले घन घुमड़–घुमड़कर
बिन बरसे विचलित हो जाते।"[8]

केतकी अपनी उद्विग्नता को आर्यभट के समक्ष रखना चाहती है। परंतु आर्यभट इस विषय में कुछ भी नहीं सोचना चाहते और केतकी को भी यही समझाते हुए कहते हैं– "तुम्हारी उद्विग्नता मेरे लिए घातक हो सकती है केतकी।————————तुम काव्य की भाषा बोलती हो और मैं अंकों की भाषा समझता हूँ। इसके उत्तर में केतकी कहती है–

मैं भी सीख गई हूँ अंकों की भाषा लेकिन–
गणित नहीं मन के रहस्य
संबंधों का सौर जगत्
पेचीदा, झीना औ' गहरा है
कल–कल करती गंगा मन में
आवेश हिला देता अंदर तक
पर जीवन तट पर ठहरा है––"[9]

आज वर्तमान युग में भी प्रेमिका की हृदय वेदना को समझने वाला कोई नहीं होता। वह आर्यभट के अन्वेषण में बाधा नहीं बनना चाहती परंतु वह इस बात से भी डरती है कि उसका यह प्रेम केवल प्रेम ही बनकर ना रह जाए वह अपने प्रेम को विवाह का रूप देना चाहती है। आर्यभट को समझाते हुए कहती है–

"मुझे प्रसन्न देखना चाहते हो तो–
संबंधों के सौर जगत में उतरो तो
पढ़ो आर्यभट इस खगोल को
जहां तैरते भाव विह्वल
कहूँ बात इक तनिक सुनोगे
बिना एक उत्तप्त प्रेम के
जीवन बहुत इकहरा है।"[10]

"नाटक में केतकी का प्रसंग भी कल्पना–तत्व को रेखांकित करता है। आर्यभट के संघर्ष के क्षणों में केतकी का सहारा जीवन की भौतिक आवश्यकता ही नहीं, एक भावुक अनिवार्यता भी है।"[11] परंतु आर्यभट तो बुद्धि का अनुचर बना हुआ है। वह इस बात को ना समझना चाहते हैं और ना ही स्वीकार करना। इस समय वह सिर्फ अपने अन्वेषण पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। केतकी के पिता महामात्य भी आर्यभट का बहुत सम्मान करते हैं और वह भी अपनी पुत्री का विवाह आर्यभट जैसे महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री से करना चाहते हैं, परंतु समय की स्थिति को देखते हुए वह भी अपनी इस कामना को हृदय में ही दबा देते हैं। वर्तमान समय में भी एक पिता की शायद यही स्थिति होगी क्योंकि हर पिता अपनी पुत्री का अच्छा ही सोचता है परंतु जब उसे पता चलता है कि पूरा समाज आर्यभट का शत्रु बन गया है और उसे देश से निर्वासित करने की मांग कर रहा है तो वह भी अपने कदम पीछे खींच लेते हैं और विवाह की बात को वही दबा देते हैं। परंतु आर्यभट का साहस इस डर से बहुत बड़ा है वह अच्छी तरह से जानते हैं कि उनके अन्वेषण का समाज पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। वह मानसिक रूप से

इस विरोध को झेलने के लिए तैयार थे। वह केतकी को समझाते हुए कहते हैं– "वे दबाव तो झेलने होंगे। मुझे खोजना है अभी अपना सत्य ——— खोलने हैं इस सौरमंडल के गूढ़ रहस्य समय कहां है मेरे पास कि लोक–अपवाद सुनूँ, सुनूँ वे निरर्थक प्रलाप ——— केतकी तुम मेरी निर्बलता नहीं प्रेरणा ——— बनो।"[12]

जब चूड़ामणि–चिंतामणि, आर्यभट के इस अन्वेषण का विरोध करते हैं तब आर्यभट चूड़ामणि को समझाते हुए यही कहता है कि–"अन्वेषण परंपरा का निषेध नहीं उसका विकास है। कोई भी अन्वेषक तब तक अन्वेषण कर ही नहीं सकता जब तक वह परंपरागत मूल्यों, मानो और निष्कर्षों पर प्रश्नचिह्न लगाए।"[13] इस नाटक में बुधगुप्त जैसा पात्र भी है जो आर्यभट के अन्वेषण का सम्मान ही नहीं करता बल्कि उसे स्वीकार भी करता है और देश के हित के लिए भी उपयोगी समझता है और हर विपरीत परिस्थिति में आर्यभट के साथ खड़ा होता है और उनकी रक्षा भी करता है। बुद्धिजीवी के प्रति बुधगुप्त के मन में आदर का स्थान है। गुप्त वंश की परंपरा का अनुसरण करते हुए वे आर्यभट की वेधशाला के लिए धन उपलब्ध कराते हैं। बुधगुप्त के संवाद से आर्यभट और केतकी के बीच पनपते संबंधों की ओर संकेत किया गया है। आर्यभट के हृदय में केतकी के लिए सहज आकर्षण पैदा हो चुका है, पर शोध उसका प्रथम कर्तव्य है।

"आर्यभट की पीड़ा भरी यात्रा केवल आर्यभट की नहीं है, बल्कि प्रत्येक बुद्धिजीवी की है जो समाज की जर्जरित मान्यताओं तथा अंधविश्वासों से टकराने, उन्हें नया रूप देने की कोशिश करता है। प्रत्येक युग के सृजक या अन्वेषक को आर्यभट में देखा जा सकता है। आर्यभट तिरस्कृत ही नहीं होता, बल्कि उसके शोधकार्य को समाजविरोधी घोषित किया जाता है। ऐसा केवल अशिक्षित और रूढ़िग्रस्त समाज ही नहीं करता, बल्कि स्पृहा और ईर्ष्यावश बौद्धिक वर्ग भी करता है। ऐसे लोग उभरते बुद्धिजीवी को नष्ट करने का षड्यंत्र रचते हैं। नाटक के पात्र चिंतामणि तथा चूड़ामणि ऐसे ही पात्र हैं इन दोनों वर्गों का मनोवैज्ञानिक चित्रण इस नाटक में हुआ है। आर्यभट इन अवरोधों, प्रतिक्रियाओं, प्रतिगामी शक्तियों से डरता नहीं, बल्कि उन मिथ्या धारणाओं का खुलासा भी करता है जो परंपराओं तथा अंधविश्वासों के कारण पैदा हो रही है।"[14] इसका एक उदाहरण हम यहां देख सकते हैं जब वह निडर होकर सबके सामने इस बात को रखते हैं- "यह प्रकोप और प्रलय का सिद्धांत भी मिथ्या ज्ञान पर ही आधारित है। मेरे मत से समय अनादि और अनंत है। इसमें व्यवधान नहीं आता। यह तो सदा चलता रहता है और एक युग से दूसरे युग में प्रवेश के समय भी न विनाश होता है, न पुनःसृष्टि– केवल ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन होता है।"[15]

"आर्यभट के संवादों से तीखे सामाजिक–राजनीतिक वक्तव्यों की झलक मिलती है। प्रताप सहगल अप्रत्यक्ष रूप से दृश्यात्मक ध्वनियों तथा पात्रों के व्यवहार द्वारा दर्शकों की भावनाओं को जगाते हैं जिससे वे स्थिति की वास्तविकता से रू–ब–रू हो सकें और स्वप्नदृष्टा आर्यभट के क्रांतिकारी और आदर्शवादी रूप को पहचान सकें। ऐसी स्थितियों के चित्रण से नाटककार तीखे तथा कसमसाहट पैदा करने वाले नाटकीय तनाव को जन्म दे सकता था, पर कई स्थानों पर ऐसा नहीं लगता है। सुविधाभोगी चिंतामणि और चूड़ामणि तथा सत्य का अन्वेषण करने वाले अन्वेषक के बीच मूल्यों की गहरी खाई है। इनके बीच टकराव ही नाटकीय स्थितियों को जन्म देता है।"16 "आर्यभट–बुधगुप्त, आर्यभट–केतकी, आर्यभट–चिंतामणि–चूड़ामणि के बीच के टकराव तथा संबंधों को लेखक कम से कम शब्दों में इस तरह

उभारता है कि पृष्ठभूमि स्वतः स्पष्ट हो जाती है। पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए वह लंबे वक्तव्य से बचा है। इसी तरह लेखक आर्यभट के अंतर्द्वंद, उसकी वेदना, छटपटाहट, महत्वाकांक्षा, उसके प्रति बुधगुप्त की कोमल भावनाएं और उसकी विवशता, केतकी की तरलता आदि को भी प्रकट करता है। इससे अनेक मंचीय संभावनाएं हमारे सामने उभरती हैं। एक ओर आर्यभट के प्रति विरोधी धारा है तो दूसरी ओर केतकी की पवित्र कोमल भावनाएं हैं। इससे एक टकराहट पैदा होती है जो दर्शकों की सहानुभूति को आर्यभट की ओर मोड़ती है। यही टकराहट चरित्रों को उभारने का काम भी करती है। चिंतामणि और चूड़ामणि के चरित्र इसी टकराहट के कारण सामने आते हैं और सामाजिक नजरों से गिरते हैं। संवाद छोटे, प्रभावपूर्ण, कथा को विकास देने वाले तथा चरित्र को उभारने वाले हैं।"[17]

प्रत्येक महान व्यक्ति का विरोध परंपरागत अंधविश्वासी समाज ने ही नहीं, बल्कि विद्वतजनों ने भी किया है। आर्यभट भी ऐसे ही विरोध का सामना करता है चूड़ामणि और चिंतामणि नाटकीय रूप से सभासदों को अपनी ओर कर लेते हैं। "धर्म के नाम पर लोगों को भड़काना सहज है। यह काम युगों से होता रहा है। आर्यभट के विरुद्ध जनसमूह को खड़ा करने का काम चिंतामणि और चूड़ामणि करते हैं। आर्यभट को अपने अन्वेषण पर विश्वास होता है। वह जानता है, "सत्य तो सूर्य होता है, उसे छलनी से ढका नहीं जा सकता।" नाटक के अंत में आर्यभट के ये शब्द उसके चरित्र को ऊंचा उठा देते हैं, "मेरी तो यही इच्छा है कि मुझे एक अन्वेषक के रूप में याद किया जाए– अन्वेषक जो सत्य के सामने मिथ्या ज्ञान और मिथ्या अभिमान को स्वीकार नहीं करता– अन्वेषक, जिसकी राहें दुर्गम और लंबी होती हैं– अन्वेषक चरैवेति–चरैवेति करता हुआ निरंतर चलता रहता है।"[18] 'अन्वेषक' नाटक की अधिकांश कथा का आधार लेखक की कल्पना है, पर नाटककार ने जिन ऐतिहासिक तथ्यों का प्रयोग किया है, उनकी रक्षा की है कहा जा सकता है कि 'अन्वेषक' इतिहास के आईने में वर्तमान का एक सार्थक प्रतिबिंब है। "अन्वेषक' के माध्यम से आर्यभट को आप अपने आसपास महसूस करें और मौजूदा स्थितियों एवं मूल्य तथा शिक्षा–व्यवस्था पर हुई टिप्पणी के साथ–साथ प्रगतिगामी एवं अवरोधकारी शक्तियों के बीच छिडें संघर्ष को रेखांकित पाएं, तो इस प्रश्न पर भी विचार करें कि क्या पतनशील समाज और छिन्न–भिन्न व्यवस्था के रहते हर अन्वेषक की नियति वही नहीं होगी जो आर्यभट्ट की इस नाटक में हुई?"[19]

चिंतामणि और चूड़ामणि अपनी भूमिका में सफल चरित्र हैं। ऐसे चरित्र हर युग में होते हैं जो स्वयं तो कुछ नहीं करते, पर दूसरे के काम में रोड़ा अटकाते रहते हैं। अपने स्वार्थ तथा हित के लिए किसी भी सीमा तक गिरने के लिए तैयार रहते हैं। वे आर्यभट का विरोध इन्हीं निजी कारणों से करते हैं। बहुमत से सामाजिक–राजनीतिक निर्णय लेने के खतरों की तरफ भी नाटककार ध्यान आकर्षित करता है। बहुमत से 'सत्य' को प्रमाणित नहीं किया जा सकता, उसके लिए वैज्ञानिक प्रमाण की आवश्यकता होती है। पर अगर भीड़ की भावनाओं को भड़काकर वैज्ञानिक प्रमाणों को बहुमत से अंधविश्वास के तराजू पर तोल दिया जाए तो सत्य अपने को कैसे प्रमाणित करेगा? यहाँ पर प्रजातंत्र की इस सबसे बड़ी कमजोरी को रेखांकित किया गया है।

संदर्भ

1. सहगल, शशि. अन्वेषकः एक मॉर्डन-क्लासिक. आर्य प्रकाशन मण्डल. पृष्ठ **7.**
2. वही. पृष्ठ **15.**

3. वही. पृष्ठ **10.**
4. वही. पृष्ठ **13.**
5. वही. पृष्ठ **33.**
6. वही. पृष्ठ **34.**
7. वही. पृष्ठ **35.**
8. सहगल, प्रताप. अन्वेषकः किताबघर प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **30.**
9. वही. पृष्ठ **30.**
10. वही. पृष्ठ **31.**
11. सहगल, शशि. अन्वेषकः एक मॉर्डन क्लासिक. आर्य प्रकाशन मण्डल. पृष्ठ **63.**
12. सहगल, प्रताप. अन्वेषक. किताब घर प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **32.**
13. वही. पृष्ठ **40.**
14. सहगल, शशि. अन्वेषकः एक मॉर्डन-क्लासिक. आर्य प्रकाशन मण्डल. पृष्ठ **36.**
15. सहगल, प्रताप. अन्वेषक. किताबघर प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **44.**
16. सहगल, शशि. अन्वेषकः एक मॉर्डन-क्लासिक. आर्य प्रकाशन मण्डल. पृष्ठ **37.**
17. वही. पृष्ठ **37.**
18. वही. पृष्ठ **39.**
19. वही. पृष्ठ **11.**